

आज का पुरुषार्थ, 5 April 2022

From: BK Suraj bhai

Website: www.shivbabas.org

*धारणा – " कर्म करे लेकिन ऐसा नीति अपनाये कि कर्म भी करे
और स्वयं के साथ बाबा की याद भी बनी रहे "*

कर्म तो मनुष्य प्रतिपल कर रहा है। परन्तु जो मनुष्य **अनासक्त भाव** से कर्म करता है, जो मनुष्य डिटैच (detach) होकर कर्म करता है, जो मनुष्य **आत्मिक स्वरूप** में और **आत्मिक भाव** में स्थित रहकर कर्म करता है उसे ही अलौकिक मनुष्य कहा जाता है।

उसमें भी जो मनुष्य योगयुक्त होकर कर्म करे, उसमें तो सारी क्लोयालिटीज स्वतः ही आ जाती है। योगयुक्त होकर कर्म करना एक कला है। श्रीमद्भागवत गीता में भी कहा है

" हे अर्जुन! तुम अपनी बुद्धि को मेरे स्वरूप पर स्थिर रखते हुए कर्म करो "

यही वास्तव में **कर्मयोग** है। बाबा ने इसको हमें बहुत सहज बनाकर दिया है। भिन्न भिन्न अभ्यास करना सीखा दिया है। ताकि कर्मयोग हमारे लिए **सहज** हो जाये।

संसार में कई लोग समझते हैं कर्मयोग माना कोई अच्छे कर्म करे, बड़े कर्म करे। दुनिया में भी कहते हैं यह व्यक्ति **कर्मयोगी** है। लेकिन जबतक **योगयुक्त** नहीं है तब तक कोई भी मनुष्य कर्मयोगी नहीं हो सकता।

यदि हम कर्मयोगी नहीं हैं, तो हर कर्म का गहरा, बुरा और निगेटिव इफेक्ट हमारे ऊपर पड़ेगा। हर कर्म हमें बांधेगा और कर्मातीत अवस्था तक हम नहीं जा सकेंगे।

लेकिन यदि हम **योगयुक्त** होकर कर्म करते हैं तो हर कर्म हमें **एनर्जी** देता है। हर कर्म बहुत बड़ा **पुण्य** बन जाता है। हर कर्म हमारे लिए जैसे संसार में प्रेरणा देने वाला हो जाता हो।

और जब हम योगयुक्त होकर कर्म करते हैं, अर्थात् हम महसूस करते हैं कि ... " **बाबा हमारे साथ है** "

..... तो उसकी **शक्तियाँ** हमसे जुड़ जाती है। वह शक्तियाँ तब डबल फोर्स की कार्य करती है।

अर्थात बाबा की शक्ति और हमारी शक्ति दोनों **कम्बाइण्ड** हो जाती है। और बहुत जल्दी कार्य पूर्ण हो जाती है।

इसलिए सहज भाव से कर्म करना सीखें। **कर्मयोगी** वही बन है सकते है जो कर्म **कॉन्शास** (conscious) न हो। जो टाइम कॉन्शास न हो। टाइम पे कर्म कम्प्लीट करना अच्छी बात है लेकिन टाइम कॉन्शास हो जाना, बार-बार घड़ी देखना, दुसरो को भी बार-बार कहना .. " जल्दी करो, जल्दी करो "

यह टाइम कॉन्शासनेस टेन्शन पैदा करती है। और कर्म कॉन्शासनेस सबकुछ भूला देता है। कर्म में पूरी तरह तल्लीन रहना भी परम आवश्यक है। लेकिन इतना भी तल्लीन न हो कि हम **बाबा** को ही भूल जाये।

तो आइये सहज भाव से कर्म करने की प्रैक्टिस करे। हम अपने **कर्म को एन्जॉय करे**। आनंद में रहकर कर्म करे। ऐसी मेन्टालिटी बनाते चले अपनी कि हम बहुत प्रसन्नता से वह कर्म कर सके।

तो कर्म में हम क्या क्या अभ्यास करे ...

" मैं आत्मा इस देह में बैठकर कर्म करा रही हूँ .. मै कराने वाली हूँ "

दुसरा ..

" बाबा की शक्तियाँ मेरे साथ जुड़ी हुई है .. बाबा मेरे साथ है "

इसको जरा बार-बार अभ्यास करे।

किसी कर्म में स्वमान की अच्छी अच्छी अभ्यास करे ...

" मैं पूर्वज हूँ .. मैं इष्ट देव-देवी हूँ .. मैं जहान का नूर हूँ .. मैं कल्पवृक्ष के जड़ हूँ "

और भी जो जो स्वमान अच्छा लगता हो उनको याद करते रहे।

और अगला अभ्यास यही रहे कि

" कर्म करते हुए बुद्धि हमारी बाबा के स्वरूप पर ही स्थिर है "

साथ में कभी अभ्यास करे ...

" बाबा की किरणें मुझ पर पड़ रही है "

तो कभी अभ्यास करे ...

" मैं फरिश्ता बन कार्य कर रहा हूँ "

इसतरह हम कर्मयोग की प्रैक्टिस करे और कर्मातीत अवस्था की ओर चले।

तो आइये आज सारा दिन हम यह स्वमान अभ्यास करे ...

" मैं इस जहान की नूर हूँ .. इस जहान की शोभा हूँ .. मेरा इस संसार में उपस्थित होना ही बहुत महत्वपूर्ण है "

और साथ में अभ्यास करे ...

" बाबा की किरणें निरन्तर मुझ पर पड़ रही है .. शक्तियों का फाउन्टेन मुझ पर उतर रहा है "

॥ ओम शान्ति ॥